ध्यानमञ्जरी

सुमिरौं श्रीरघुवीर धीर रघुवंश विभूषण।
शरण गहे सुखराशि हरत अघ–सागर दूषण।।
सुन्दर राम उदार बाण कर शारँगधारी।
हिय धरि प्रभुको धाम विदुषजन–आनँदकरी।।1।।
अवधपुरी निज–धाम परम अति सुन्दर राजै।
हाटकमणिमय सदन नगनकी कान्ति विराजै।।
पौरि द्वार अति चारु सुहावन चित्रित सोहैं।
चम्प तार मन्दार कल्पतरु देखत मोहैं।।2।।
भवन भवन चित्राम चित्रकी रम्भा सोहैं।
वनज सुतनकी पाँति कान्ति गोखन मग जोहैं।।
तोरण केतु पताक ध्वजा तहँ परम सुहाई।
जनु रघुवर हितकरन आय त्रिभुवन छवि छाई।।3।।
बीथी बगर बजार रतन खँचि ज्योति उजासा।
रहन न पावै तिमिर सहज ही होत प्रकाशा।

देखि पुरी छवि भरी मध्यके अटकत रथ रवि।
हर्षहिं वर्षहिं सुमन विबुध जन निरखि पुरी छवि।।4।।
श्रीरघुवर यश भरी पुरी वर वर की दायन।
धर्मशील नर नारि सबै प्रभु–सुयश–परायन।।
गाबत रघुवर–चरित मिलत जित तित ते भामिनि।
स्वर अस कोकिलनाद रूप जनु दमकति दामिनि।।5।।
तिन युवतिनको भाग वरणि कापै कहि आवैं।
शचि शारद नगसुता देखिके मन ललचावैं।।
अवध पुरिनकी अवधि यही श्रुति संमृति वरनी।
ध्यान धरै सुखकरनि नाम उचरत अघहरनी।।6।।
करि करि बहुत कलेश कहत उपमा जो गुणि जन।
अन्य उक्ति सब अल्प अवध सम अवध भले बन।।
वापी कूप तड़ाग रतन–सोपान बनाये।
रहे अमल जल पूरि विकसि कल्हार जु छाये।।7।।
शीतल तरु की छाँह विहग कूजत मन भाये।
चहूँ ओर आराम लगत उपबन जु सुहाये।।
तिन पर केकि कपोत कीर कोकिल किलकारत।
सुर धरि तिनकी देह मनो प्रभु सुयश उचारत।।8।।
झूमि रहे लगि हार भार फल फूलन भारी।
पथिक जनन फल देन मनहुँ तिन भुजा पसारी।।
निकटहिं सरयू सरित धरे अस उज्ज्वल धारा।
भव–सागर को तरन विदित यह पोत उदारा।।9।।
हरन पाप त्रयताप–जनक, चिन्तितत फल देनी।
सुकृती जन आरोह सुदृढ़ वैकुण्ठ निसेनी।।

तीर नरन की भीर लगत अस परम सुहाये।
मनहुँ व्योम को त्यागि अमर–गण सेवन आये।।10।।
करैं जो मज्जन पान धन्य बड़ भाग जननके।
विविध भाँतिके घाट तहाँ मन थकित मुनिनके।।
नीर परम गम्भीर चलत गहिरे स्वर गाजैं।
तहाँ तीर बहु सघन कमल अति सुन्दर राजैं।।11।।
कमल कमल के मध्य यूथ मिलि भँवर गुँजारैं।
मानहु मुनि जन–वृन्द वेद ध्वनि शब्द उचारैं।।
त्रिविध बयारि बहार बहत निशिदिन अघहारी।
शीतल मन्द सुगन्ध परम अति आनँदकारी।।12।।
बोलत चकवा कुण्ड–तीर मन मोद बढावैं।
मानहु परम सुदेश निकर मिलि किन्नर गावैं।।
कानन तहाँ अशोक शोक तेहि देखत भाजैं।
विविध भाँतिके वृक्ष सबै वृन्दारक राजैं।।13।।
शाखा पत्र अनूप कहौं का शोभा उनकी।
फल कुसुमन के झुण्ड निरखि सुधि रहत न तनकी।।
कल्पवृक्ष के निकट तहाँ यक धाम मणिन युत।
कञ्चनमय सब भूमि परम अति राजत अद्भुत।।14।।
स्वर्णवेदिका–मध्य तहाँ यक रतन सिंहासन।
सिंहासनके मध्य परम अति पद्म शुभासन।।
ताके मध्य सुदेश कर्णिका सुन्दर राजै।
अति अद्भुत तहँ तेज वह्नि सम उपमा भ्राजै।।15।।
तामधि शोभित राम नील इन्दीवर ओभा।
अखिल रूप अम्भोधि सजलघन तन की शोभा।।

शिर पर दिव्य किरीट जटित मंजुल मणि मोती।
निरखि रुचिरता लजित निकर दिनकर की ज्योति।।16।।
कुण्डल ललित कपोल युगल अति परम सुदेशा।
तिनको निरखि प्रकाश लजित राकेश दिनेशा।।
मेचक कुटिल सुकेश सरोरुह नयन सुहाये।
मुख पंकजके निकट मनहुँ अलि छौना आये।।17।।
भृकुटित्रय पद दुगुन मनहुँ अलि अवलि विराजै।
नासा परम सुदेश वदन लखि पङ्कज लाजै।।
चितवनि चारु कृपाल रसिक जन मन आकर्षत।
मन्द हास मृदु बयन जननको आनँद वर्षत।।18।।
दीरघ दीप्त ललाट ज्ञानमुद्रा दृढ धारी।
सुन्दर तिलक उदार अधिक छवि शोभित भारी।।
परम ललित मणिमाल हार मुक्ता-छवि राजै।।
उर श्रीवत्स सुचिन्ह कण्ठ कौस्तुभ मणि भ्राजै।।19।।
मध्य यज्ञ-उपवीत गंग-धारा जु विराजै।
उभय भुजा आजानु नगन युत कङ्कण राजै।।
चूनी रतन जड़ाय मुद्रिका अधिक सँवारी।
शोभित अद्भुत रूप अरुणकी छवि अनुहारी।।20।।
भूषण विविध सुदेश पीत पट शोभित भारी।
लसत कोर चहुँ ओर छोर कल कञ्चन धारी।।
रोमावलि बनि आइ नाभि अस लगत सुहाई।
त्रिवली ता मधि ललित रेख त्रय अति छबि छाई।।21।।
कटि परदेश सुढार अधिक छबि किंकिणि राजै।
जानु पुष्ट बनि गूढ गुल्फ अति ललित विराजै।।

नूपुर पुरट सुचारु रचित मणि माणिक सोहैं।
कलरव स्वर संगीत सुनत परिजन मन मोहैं।।22।।
युगल अरुण पदपद्म चिन्ह कुलिशादिक मण्डित।
पद्मा नित्य निकेत शरणगत भव-भय खण्डित।।
दक्षिण भुज शर सुभग सुहावन सुन्दर राजै।
दिव्यायुध सुविशाल बाम कर धनुष विराजै।।23।।
षोडश वर्ष किशोर राम नित सुन्दर राजैं।
रामरूप को निरखि विभाकर कोटिक लाजैं।।
अस राजत रघुवीर धीर आसन सुखकारी।
रूप सच्चिदानन्द बामदिशि जनक-कुमारी।।24।।
नगन जरे छबि भरे विविध भूषण अस सोहैं।
सुन्दर अङ्ग उदार विदित चामीकर कोहैं।।
अलक झलकता श्याम पीठ शोभित कल बेणी।
सुन्दरताकी सींव किधौं राजति अलि-श्रेणी।।25।।
रचित सुविविध प्रकार माँग जरतार सँवारी।
मनहुँ सुरसरीधार बनी शोभा अस भारी।।
पाटनकी लर और बड़े-बड़े उज्वल मोती।
सघन तिमिरके मध्य मनहुँ उडुगणकी ज्योति।।26।।
रतन रचित मणि खचित शीश पर विन्दा छाजै।
ललित कपोल सुयुगल कर्ण ताटंक विराजै।।
उज्वल भाल सुचारु अमित उपमा अस सोहै।
राजत परम सोहाग भागको भवन किधौं है।।27।।
गोरोचन को तिलक ललित रेखा बनि आई।
उन्नत नासा सुभग लसत बेसरि जु सुहाई।।

भृकुटी नयन विशाल सौम्य चितवनि जगपावन।
मानहु विकसित कमल वदन अस लगत सुहावन।।28।।

अरुण अधर तर दशन–पाँति अस लगति सुहाई।
चारु चिबुक विच कनक विन्दु मेचक छबि छाईं।।

कण्ठपोति मणि ज्योति सुछबि मुक्ता–वरमाला।
पदिक रचित कलधौत विराजत हृदय विशाला।।29।।

हेमतन्तु कर रचित अरुण सारी रंग झीनी।
कञ्चुकि चित्रित चतुर विविध शोभित रंग भीनी।।

वर अङ्गद छबि देति बाहु अस लगति सुहाई।
करन चुरी रंग भरी ललित मुँदरी बनि आई।।30।।

पद्मराग मणि नील जटित युग कंकण राजैं।
मनहु बनजके फूल द्विरेफन–पंक्ति विराजैं।।

लहँगा कटि परदेश भाँति अति शोभित गहरी।
अरुण असित सित पीत मध्य नाना रंग लहरी।।31।।

हरित नगन कर जडित युगल जेहरि अस राजैं।
तिन तर घुँघरू और अग्र बिछिया जु विराजैं।।

तिन पर नग जु अमोल ललित चूनी गण लाये।
चरण तारु तल अरुण सहज ही लगत सुहाये।।32।।

अतुलित युगल स्वरूप कवन अस उपमा जिनकी।
जेतिक उपमा दीप्त शक्ति करि भासित तिनकी।।

यहि विधि राजत राम अवधपुर अवध–विहारी।
दम्पति परम उदार सुयश सेवक सुखकारी।।33।।

दक्षिण भुज रिपुदलन गौर तन तेज उदारा।
उभय हेतु अनुसार धरे व्रत खण्डित धारा।।

शेष लिये कर छत्र भरत लिये चवँर ढुरावैं।
अनिलसुवन कर जोरि सुप्रभुकी कीरति गावैं।।34।।
अपनी अपनी ठौर नित्य परिकर बनि भारी।
सुरति शक्ति विमलादि रहत नित आज्ञाकरी।।
जो जो जेहि अधिकार सचिव सेवा मन बासै।
बीणाधर सुरतान गान करि प्रभुहिं उपासै।।35।।
यही ध्यान उर धरै स्वयं तन सुफल करेवा।
भव चतुरानन आदि चरण वन्दैं सब देवा।।
यह दम्पति वर ध्यान रसिक जन नित प्रति ध्यावैं।
रसिक बिना यह ध्यान और सपनेहु नहिं पावैं।।36।।
अमल अमृत रस-धार रसिक जन यहि रस पागैं।
तेहिको नीरस ज्ञान योग तप छोई लागैं।।
परम सार यह चरित सुनत श्रवणन अघहारी।
ध्यान परम कल्याण सन्त जन आनँदकारी।।37।।
तिनहिं भूलि जनि कहौ कुटिलिता पंक मलिन मन।
यह उज्वल मणि-माल पहिरिहैं परम रसिक जन।।
जगत्-ईशको रूप बरनि कह कौन अधिक मति।
कहाँ अल्प खद्योत भानुके निकट करै द्युति।।38।।
कहँ चातक की शक्ति अखिल जल चोंच समावै।
कछुक बुन्द मुख परै ताहि लै आनँद पावै।।
सुनि आगम-विधि-अर्थ कछुक जो मनहिं सुहायो।
यह मङ्गलकर ध्यान यथामिति वरनि सुनायो।।39।।
श्रीगुरु सन्त अनुग्रह ते अस गोपुर बासी।
रसिक जनन हित करन रहसि यह ताहि प्रकाशी।।
ध्यानमञ्जरी नाम सुनत मन मोद बढ़ावै।
श्रीरघुवरको दास मुदित मन अग्र सो गावै।।40।।

***